Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

राम चरित मानस के संवाद की सामाजिक चेतना

Dr. Gunjan Srivastava*

Sardar Patel Marg, Belbanwa, Metihari East Champaran

सार – *उतर भारत में रामभक्ति का जो प्रचार-प्रसार हुआ उसका एक मात्र श्रेय रामानंद को ही है। रामानंद के पूर्व भी बहुत से वैष्णव भक्त हुए, किंतु राम भक्ति के वास्तविक आचार्य रामानंद ही समझे गए। यधपि रामानंद के शिष्य कबीर ने राम नाम का आश्रय लेकर निराकारवादी संत मत की रूपरेखा निर्धारित की, तथापि रामभक्ति का पूर्ण विकास तुलसीदास की काव्य रचनाओं में ही हुआ। अतः रामकाव्य की कवियों पर विचार करने से पूर्व राम भक्ति के विकास पर दृष्टि डालना अनिवार्य होगा।*

राम का महत्व सर्वप्रथम हमे वाल्मीकि रामायण में मिलता है। इसकी तिथि ईशा के 600 या 400ईशा पूर्व मानी जाती है(1) वाल्मीकि रामायण का दृष्टिकोण लौकिक है जो इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। इस संदर्भ में डा० रामकुमार वर्मा ने लिखा है-"इसके द्वारा ही हम धर्म के यथार्थ रूप का परिचय पा सकते हैं।ग्रंथ धार्मिक न होने के कारण अंधविश्वास और भावोंमेष से रहित है अतः इसमें हम लौकिक दृष्टिकोण से धर्म का रूप देख सकतेहैं।" (2)

----------X----------

भूमिका:

तुलसीदास की सर्वश्रेष्ठ रचना और प्रति-निधि रचना' रामचरितमानस' है। मानस की रचना में कवि ने संस्कृत प्राकृत आदि की विभिन्न पौराणिक एवं साहित्यिक ग्रंथों का उपयोग सम्यक रूप से किया है इस संदर्भ में डा०गणपति चंद गुप्त ने लिखा है- "कथा का मूल आधार वाल्मीकीय रामायण है, किंतु उनमें अनेक स्थलों पर परिवर्तन एवं परिवर्द्धन भी पर्याप्त मात्रा में किया गया है, जिसमें कवि की मौलिक दृष्टि का उन्मेष मिलना है। इसके अतिरिक्त अध्यात्म रामायण, श्रीमद् भागवत, विष्णुपुराण, शिवपुराण, हनुमनाष्टक, प्रसन्नराघव, रघुवंश उतररामचरित आदि ग्रंथो का प्रभाव इस पर विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होता है।

जैसा की स्वयं कवि ने "नानापुराण निगमागम संमतं याद् रामायणे निगदिन क्वचिदितोडपि" कहकर स्वीकार किया है, इसमें विभिन्न स्रोतों की सामग्री का उपयोग स्वतन्त्रतापूर्वक किया गया है।" (3)

रामचरितमानस का स्थान हिंदी साहित्य में ही नहीं अपितु विश्व के सभी साहित्यों में अनुपम है इसकी संवाद योजना में एक सामाजिक चेतना का दर्शन होता है।

इस रचना के माध्यम् से तुलसीदास के द्वारा जीवन संबंधी तीन साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है- (1) अन्तर्साक्ष्य (2) वाह्यसाक्ष्य (3) जनश्रुति इसमें सबसे अधिक प्रमाणिक अन्तर्साक्ष्य है। क्योंकि वह स्वयं लेखक के द्वारा उपस्थित किया गया है। सबसे कम प्रमाणिक जनश्रुति है क्योंकि वह समय के प्रवाह में परिवर्तित होती रहती है वाह्य साक्ष्य से भी प्रमाणिक बातें ज्ञात हो सकती है यदि वे अनेक घटनाओं से समर्थित हो। जबतक कि तथ्यपूर्ण और विश्वस्त खोज नहीं होती तबतक हमें अन्तर्साक्ष्य की सामग्री को ही प्रामाणिक मानना चाहिए। तुलसीदास की रामचरित मानस कथा एक महा-काव्य के रूप् में रचित है, जिसमें जीवन के समस्त अंग पूर्ण रूप से प्रस्तुत किये गए हैं। इन्होनें प्रस्तुत ग्रंथ राम की कथा के साथ ही साथ सामाजिक, दार्शनिक और धार्मिक सिद्धांतो को अत्यंत स्पष्ट रूप में निरूपित किया है।' वाल्मीकि रामायण' में वे सम्पूर्ण रूप में ईश्वर हैं। तुलसीदास ने अत्यधिक अध्यात्म रामायण का ही आदर्श स्वीकार किया है फिर भी उन्होंने उसमें अपनी मौलिकता को भी स्थान दिया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मानस लगभग अध्यात्म रामायण और वाल्मीकि रामायण से साम्य रखता है।

तुलसीकृत रामचरितमानस एक महान जीवन दर्शन महाकाव्य है जिसमे भारत की सामाजिक बुनावट को जानने और समझने में सुविधा होती है जो जनमानस को सामाजिक

www.ignited.in

चेतना देते हैं इसके संवाद अतुलनीय है। भारतीय हिंदी समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक एकता को सबसे अधिक मजबूती रामचरितमानस से ही मिली जिस कारण अनेक विदेशी आक्रांताओं के नाना हमलों के बावजूद इस देश की अखंडता आज भी बनी हुई है। हमारी भारतीय सम्यता एवं संस्कृति में मानवीय गुणों के अन्तर्गत प्रेम, त्याग, करुणा समर्पण इत्यादि गुणों का बहुत अधिक महत्व है चाहे वह परिवार हो, समाज हो, देश हो या सम्पूर्ण विश्व इन सब भावनाओं के साथ सभी रिश्तों का निर्वाह किया जाता है एवं त्याग के साथ सभी वस्तुओं का भोग करने को कहा जाता है ताकि विषयों में आसक्ति कम से कम बनी रहे। मानस के माध्यम् से इन सभी गुणों को बहुत सुन्दरतरी के से प्रदर्शित किया गया है एकता, संगठन, शांतित्याग आदि का महत्व बताया गया है।

प्रसंग:

तुलसीदास का रामचरित मानस समाज दर्शन का बहुत बड़ा दर्पण है। तुलसीदास ने समाज का आदर्श विस्तार पूर्वक चित्रित किया है क्योंकि उन्होंने अपने समय में समाज की दुरावस्था देखी थी समाज सुधार के लिए ही उन्होंने 'रामायण' की चरित्र रेखा को 'अपने रामचरित मानस में परिस्कृत कर नवीनता के साथ प्रस्तुत किया है इस संदर्भ में डॉ० राम कुमार वर्मा ने लिखा है-"तुलसीदास ने समाज की मर्यादा पर विशेष लिखा है। धर्म का पालन बिना समाज के मर्यादा-पालन के नहीं हो सकता समाज के दो भाग है-व्यक्तिगत और सार्वजनिक इन दोनों क्षेत्रों में तुलसीदास ने अपनी असाधारण काव्य शक्ति, से महान संदेश दिया है। 'रामचरितमानस ' के पात्रों में लोक शिक्षा का रूप प्रधान है पारिवारिक जीवन का आचार 'मानस' में यथा स्थान सज्जित है। पिता, पुत्र और माता पति-पत्नी, भाई-सखा, सेवक पुरजन आदि का क्या पारस्परिक व्यवहार होना चाहिए इन सबका उत्कृष्ट निरूपण तुलसीदास ने अपनी कुशल लेखनी से किया है।" (4)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने अपनी रचना रामायण में मानवीय भवनाओं के निरूपण के लिए अनेक प्रसंगों का चित्रण किया है जो स्वाभाविक होते हुए भी लोक शिक्षा के प्रचारक नहीं है। लक्षमण का क्रोध, दशरथ के वचन आदि औचित्य का अतिक्रमण करते हैं परन्तु तुलसीदास ने ऐसे एक पात्र की कल्पना नहीं की जिससे दुर्वासनाओं एवं अनाचारों की वृद्धि हो। उन्होंने तामसी पात्रों में भी सद्गुणों की वृद्धि करने करते हुए चित्रित किया है और सात्विक भावनाओं से भरे हुए पत्रों को उन्होंने मर्यादा का आधार ही अंकित कर दिया है, पारिवारिक जीवन के कुछ चित्र इस प्रकार है-

(राम)

वरष चारिदास विपिन वसि करिपितु वचन प्रमान।

आइ पाय पुनि देखिहौं, मन जनि करसि मलान।।(5)

(लक्ष्मण)

उतरू न आवत प्रेम बस, गहे चरन अकुलाई।

नाथ दासु मैं स्वामि, तुम्ह तजहु न काह बसाईस।।(6)

(सीता)

स्वग मृग परिजन नगर बनु, बलकन विमल दुकूल।

नाथ साथ सुरसदन राम परन साल सुख मूल।।(7)

(दशरथ)

सो तनि सखि करबि मै काहा।

जेहि न प्रेम पनु मोर निबाहा।।(8)

(सुमंत)

तात कृपा करि कीजिअ सोई।

जते अवध अनाथ न होई।।(9)

(प्रजा)

सबहिं विचारू किन्ह मन माहि।

राम लषन सिय विनु सुख नाहिं।।(10)

(निषाद)

नाथ आजु मैं काह न पावा।

मिटे दोष दुख दरिद दावा।।

जहाँ रामु तहँ सवुई समाजू ,

विन रघुवीर अवध नहीं काजू।।(11)

(विभीषण)

जिन पायन्ह के पदु कहि, मरत रहे मन लाइ।

www.ignited.in

ते पद आज विलोकिहौं, इन्हीं नयन्हि अब जाई।।(12)

नैतिक मूल्यों एवं कर्म परिपाक के आधार पर समाज के प्रति दोहरी निति अपनाते हुए, तुलसी ने सामाजिक वर्गीकरण को दो रूपों में अमल में लाया है पहला-व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों के आधार पर दूसरा-वर्णाश्रम धर्म के अनुसार व्यक्तिगत परक स्वरूप के लिए तुलसी ने लिखा है-

ऊँच नीच मध्यम नर नारी।

लहहि दरतु निज निज अनुहारी।।(13)

तुलसीदास खल या दुष्ट से पूर्ण परिचित हैं वे खलों की आचरणलीला से मन ही मन क्रंदित हैं। इसीलिए खल वंदना प्रकरण ही उनहोंने 'मानस' मे साट दिया है इस वंदना का एक प्रयोजन है की कहीं इस पर भी वे मान जाए तथा समाज का अहित न करें। लंका दुष्टों का गढ़ है वहाँ का राक्षस समाज सम प्राकृति के लिए अतयंत प्रतिकूल है। वहाँ दिनरात दुष्ट मंडली का वाश है, आचार व्यवहार अत्यंत अनैतिक है निति नियम की बात नहीं चलती, दुष्टों के जमघट से वहाँ का सामाजिक जीवन नारकीय हो गया है। विभीषण जैसे इने-गिने लोग राक्षस समाज को नैतिकतापूर्ण मार्ग पर चलाना चाहते है इसी दृष्टि से राम विभीषण की दुःस्थिति का संकेत करते हैं-

कहु लंकेस सहित परिवारा।

कुशल कुठाहर बात तुम्हारा।।

बरु मल बास नरक कर ताता।

दुष्ट संग जनि देइ विधाता।।(14)

परिवार समाज की रीढ़ है, समाज राष्ट्र की। परिवार की मर्यादा ही समाज की मर्यादा का निर्माण करती है। अतएव मानस में सामाजिक अनुशासन की परख के पहले पारिवारिक परख की बात उभर जाती है। तुलसी की दृष्टि परिवार पर इतना महान है की उसके सामने राष्ट्र तुक्छ है। जहाँ परिवार की छोटी सी इकाई का संतुलन नहीं हो पायेगा वहाँ विशाल सम्राज्य का समीकरण कैसे संभव होगा ? राष्ट्रिय स्नेह पारिवारिक स्नेह की सप्रसंग व्याख्या है। पारिवारिक सद्भावना के आभाव में राष्ट्र का कोई मोल नहीं है। परिवार का स्नेहपूर्ण वातावरण ही सबकुछ है। लक्ष्मण, राम, सीता के अभाव में भरत के लिए अयोध्या का राज्य शोक समुदाय है-

"शोक समाजु राजु केहि देखे। लखन राम सिय बिनु पद देखे।।"(15)

समष्टि में व्यष्टि के कर्तव्य धर्म का अनुपालन ही सामाजिक अनुशासन है। कर्तव्य धर्म के पीछे व्यक्ति की नैतिकता का स्कमपूर्ण बल लगा रहता है जो अध्यात्म पूरित है। उस व्यक्ति के सामने सदा औचित्य की लाल झण्डी लगी रहती है फलतः अनुशासन की लकीर टेढ़ी नहीं हो पाती। तुलसी के समाजिक अनुशासन का सर्वोच्च शिखर चित्रकूट सभा है, जहाँ समाज के अतुलनीय संयमित स्वरूप के दर्शन होते हैं लाख परेशानियाँ है पर कोई सीता का उलंघन नहीं करता है।

राक्षस समाज में अनुशासन हीनता सर्वाधिक है। राक्षस समाज एकदम उदण्ड उश्रृंखल तथा आतंकवादी है। रावण राजा होते हुए भी रामदूत हनुमान को मृत्यु का आदेश देता है, सीता पर चंद्रहास उठा लेता है, अंगद को अपमानित करने की पुरजोर चेष्टा करता है।

तुलसी का वर्णाश्रम कर्म जब टूटता है तो उनके आदर्श समाज (राम-राज्य) का नक्शा बिगड़ जाता है। चारों तरफ पराभव एवं सामाजिक अराजकता के दर्शन होते हैं। अपने युग की समाजिक अनुशासनहीनता को तुलसी बड़े कष्ट एवं क्षोभ के साथ कविकर्म वर्णन के रूप में व्यक्त करते हैं। राजा अपने धर्म विहीनकर्म से स्खलित हो गए है। निरपराध प्रजा को नित्य दण्ड दे के उसकी दुर्दशा करते हैं। राज्य में बार-बार अकाल पड़ते हैं, लोग अन्न के अभाव में दुखी होकर मरते हैं राज दरवार में कवियों की पूछ नहीं रह गई है। राज्य में भीखमंगों की तदात बढ़ गई है भिक्षाटन करने में जाति कुजाति का भेद नहीं रह गया है राजाओं के आम आचरण से प्रकृति भी कुपित है। इन्द्र पृथ्वी पर जल नहीं बरसाते जिससे बोया हुआ अन्न उगता नहीं। सामाजिक अचार संहिता के अभाव में ब्राह्मण वेद विक्रेता हो गए है-

ससुरारि पिआरि लगी जब ते, रिपुरूप् कुटुंव भए तबते।।

नृप पाप परायन धर्म नहीं। करि दंड विडंव प्रजानि नहीं।।

कलि बारहि बार दुकाल पेरे। बिनु अन्न दुखी सव लोग मेरे।।(16)

इस प्रकार हम देखते हैं कि तुलसीदास का मानस संवाद की सामाजिक अवधारणा हर तरफ से श्रेष्ठ समीचीन एवं हृदय ग्राह्य है।

www.ignited.in

संदर्भ-सूची

(1) एन आउटलाइन ऑफ द रिलीजंस लिट्रेचर ऑफ इंडिया, पृष्ठ (4) (जे० एन० फर्कुहार)

(2) हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ० रामकुमार वर्मा, (लोक भरती प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - 219)

(3) साहित्यिक निबंध डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त (लोक भारती प्रकाशन, पृष्ठ सं०-302)

(4) हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (डॉ० राम कुमार वर्मा पृष्ठ संख्या - 422)

(5) तुलसी ग्रंथावली पहला खंड (मानस) पृष्ठ सं०-178

(6) तुलसी ग्रंथावली पहला खंड (मानस) पृष्ठ सं०-185

(7) तुलसी ग्रंथावली पहला खंड (मानस) पृष्ठ सं०-183

(8) तुलसी ग्रंथावली पहला खंड (मानस) पृष्ठ सं०-218

(9) तुलसी ग्रंथावली पहला खंड (मानस) पृष्ठ सं०-197

(10) तुलसी ग्रंथावली पहला खंड (मानस) पृष्ठ सं०-194

(11) तुलसी ग्रंथावली पहला खंड (मानस) पृष्ठ सं०-190

(12) तुलसी ग्रंथावली पहला खंड (मानस) पृष्ठ सं०-360

(13) राम चरितमानस तुलसीदास कालनेमि-रावण संवाद 6/56/5

(14) राम चरितमानस श्रीराम विभीषण संवाद 5/46/5-8

(15) रामचरित मानस वशिष्ट भरत संवाद-2/178/3

(16) रामचरित मानस-7/100 (ख)/ 3 - 4 - 5

Corresponding Author

Dr. Gunjan Srivastava*

Sardar Patel Marg, Belbanwa, Metihari East Champaran

www.ignited.in